**CHAPTER 12, मीरा के पद**

**PAGE 138, प्रश्न - अभ्यास - पद के साथ**

**11:1:12:प्रश्न - अभ्यास - पद के साथ:1**

**1. मीरा कृष्ण की उपासना किस रूप में करती है? वह रूप कैसा है?**

**उत्तर** : मीरा कृष्ण को एक पति के रूप में पूजती है, उन्हें अपना सब कुछ मानती है और खुद को उनकी दासी। कृष्ण के जिस रूप की मीरा आराधना कर रही हैं वह मनमोहक है। वे पर्वत को धारण किए हुए हैं और अपने सिर पर मोर-मुकुट सुशोभित किये हुए है।

**11:1:12:प्रश्न - अभ्यास - पद के साथ:2**

**2. भाव व शिल्प सौंदर्य स्पष्ट कीजिए -**

**(क) अंसुवन जल सींचि-सींचि, प्रेम-बेलि बोयी**
**अब त बेलि फैलि गई, आणंद-फल होयी**

(ख) **दूध की मथनियाँ बड़े प्रेम से विलोयी**

**दधि मथि घृत काढ़ि लियो, डारि दयी छोयी**

**उत्तर** :

(क) **भाव-सौन्दर्य**- इस कविता के लिए मीरा की भक्ति अपने अधिकतम स्तर पर है। मीरा ने कृष्णा रूपी बेल को अपने आंसुओं से सींचा है। मीरा अब आनंद की अनुभूति कर रही है। क्यूंकि जो कृष्णा रूपी बेल उन्होंने लगाया था उसमे अब फल आने शुरू हो गए है।

**शिल्प-सौन्दर्य**- भाषा अत्यंत मधुर,राजस्थान मिश्रित और संगीतमय है**।** “सींची-सींची” में पुनरुक्ति अलंकार है । प्रेम-बेलि-बोयि, आनंद-फल और अनसुवन पानी में रूपक अलंकार का बहुत अच्छी तरह से उपयोग किया जाता है।

(ख) **भाव-सौन्दर्य**- इस कविता में, मीरा ने भक्ति की महिमा को बहुत ही सुंदर तरीके से प्रस्तुत किया है। इस श्लोक में भक्ति को मक्खन के समान और सांसारिक सुखों के रूप में महत्वपूर्ण माना गया है। इन पंक्तियों में, मीरा संसार के सार तत्व को ग्रहण करने और व्यर्थ की बातें छोड़ने को कहती है।

**शिल्प-सौन्दर्य**- ‘घी’और ‘छाछ’शब्द प्रतीक रूप में लिए गए हैं जिसमें ‘छाछ’सांसारिकता और ‘घी’ भक्ति का प्रतीक है। 'घृत' और 'दधि' आदि तत्सम शब्द हैं। अन्योक्ति अलंकार प्रयोग “दूध की मथनियाँ...छोयी”में किया गया है।

**11:1:12:प्रश्न - अभ्यास - पद के साथ:3**

**3. लोग मीरा को बावरी क्यों कहते हैं?**

**उत्तर** : मीरा कृष्ण की भक्ति में सुध-बुध खो बैठी है। उन्हें समाज की परम्परा और मर्यादा का कोई भी ध्यान नहीं है। कृष्णा की भक्ति में लीन होकर मीरा ने राज परिवार छोड़ दिया और लोक निंदा सहन किया। मीरा मंदिर-मंदिर में घूम कर भजन और नृत्य किया। भक्ति की यह पराकाष्ठा मीरा के बावलेपन को दर्शाती है। इसलिए लोगों ने उन्हें बावरी कहा।

**11:1:12:प्रश्न - अभ्यास - पद के साथ:4**

**4. विस का प्याला राणा भेज्या, पीवत मीरां हाँसी - इसमें क्या व्यंग्य छिपा है?**

**उत्तर** : मीरा राज परिवार की बहू थीं। उनके पति और ससुराल वाले उनकी कृष्ण की भक्ति को मर्यादा और लाज के नाम पर कलंक के रूप में देखते हैं। इसी कारन मीरा के पति राणा ने उनके पास विष का प्याला भेजा जिसको मीरा ने हँसते-हँसते पी लिया।  कृष्ण की भक्ति में लीन मीरा पर विष का कोई प्रभाव नहीं पड़ा।  व्यर्थ की सांसारिकता में फंसे नादान और मुर्ख प्राणी ये भी नहीं समझते की मीरा कृष्णा भक्ति में पूर्णतया लीन है। किसी विष का उनपे कोई असर नहीं होता है।  प्रभु भक्ति में लीन व्यक्ति का विरोधी कोई नुकसान नहीं आकर सकते है।

**11:1:12:प्रश्न - अभ्यास - पद के साथ:5**

**5. मीरा जगत को देखकर रोती क्यों हैं?**

**उत्तर** : मीरा देखती है कि संसार के लोग मोह में लिप्त हैं और उनका जीवन व्यर्थ जा रहा है। मीरा सांसारिक सुख और दुख को बेकार मानती है। यह देखकर रोती है कि पूरी दुनिया सांसारिक सुख और दुख को सच मानती है।

**PAGE 138, प्रश्न - अभ्यास - पद के आसपास**

**11:1:12:प्रश्न - अभ्यास - पद के आसपास:1**

**6. कल्पना करें, प्रेम प्राप्ति के लिए मीरा को किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा होगा।**

**उत्तर**: मीरा के कृष्ण-भक्ति या कृष्ण प्रेम को समाज और परिवार ने बहुत गलत और गंदे तरीके से देखा था। इसलिए मीरा के प्रेम की राह आसान नहीं थी और उन्हें कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। सबसे पहले परिवार के विरोध का सामना करना पड़ा। मीरा को रोकने के लिए अनगिनत प्रयास किए गए। समाज के लोगों ने ताना मारा और उनके चरित्र पर सवाल उठाया। उन्हें मारने के लिए प्रयास किए गए। इस तरह मीरा को कृष्णा का प्रेम पाने से रोकने के लिए हर संभव प्रयास किया गया।

**11:1:12: प्रश्न - अभ्यास - पद के आसपास:2**

**7. लोक लाज खोने का अभिप्राय क्या है?**

**उत्तर** : प्रत्येक समाज की अपनी गरिमा होती है और जब कोई व्यक्ति इसके विपरीत कार्य करता है तो इसे गरिमा का उल्लंघन माना जाता है। उसके सार्वजनिक गरिमा को खोने की बात होती है। मीरा की शादी एक राजपुताना परिवार में हुई थी। शाही परिवार से संबंधित होने के नाते वहाँ महिलाओं के लिए पर्दा प्रथा और पुरुषों के सामने आना आदि जैसे कई मुद्दों का पालन करना अनिवार्य था। मंदिरों में जाना और भजन-कीर्तन में भाग लेने की अनुमति नहीं थी लेकिन मीरा चली गई है। मीरा झूठी मर्यादाओं  नहीं की और कृष्णा की भक्ति में लीन हो गयी।  मंदिरो में जाना,  सत्संग करना तथा साधु संतो के साथ उठना बैठना निर्भयता से जारी रखा।  इसी सन्दर्भ को लोक लाज छोड़ने की बात कही गयी है।

**11:1:12: प्रश्न - अभ्यास - पद के आसपास:3**

**8. मीरा ने ‘सहज मिले अविनासी‘ क्यों कहा है?**

**उत्तर** : मीरा कहती हैं कि कृष्ण अविनाशी और अमर हैं। उन्हें पाने के लिए सच्चे मन से सरल भक्ति करनी होगी और बस भगवान इस भक्ति से प्रसन्न होकर भक्त से मिलते हैं।

**11:1:12: प्रश्न - अभ्यास - पद के आसपास:4**

**9. लोग कहै, मीरां भइ बावरी, न्यात कहै कुल-नासी- मीरा के बारे में लोग (समाज) और न्यात (कुटुंब) की ऐसी धारणाएँ क्यों हैं?**

**उत्तर**: समाज के लोग सांसारिक स्नेह और माया को वास्तविकता मानते हैं। उनके लिए केवल धन, संपत्ति, संपत्ति आदि की बातें ही सत्य और सुंदर हैं। मीरा के अनुसार इन सांसारिक सुखों का त्याग करने के कारण संसार उनको पागलपन की संज्ञा देता है। उनके परिवार के अनुसार, मीरा ने कुल के सम्मान की परवाह किए बिना मंदिरों में नाचने, साधु-संतों के साथ उठने-बैठने आदि कुल का नाश करने वाले कार्य किये।